समाज के विकास में मोबाइल : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. प्रमोद वर्मा,

असिस्टेंट प्रोफेसर (समाजशास्त्र विभाग),

सरदार भगत सिंह संघटक राजकीय महाविद्यालय, ढका खुर्द, पुवायां, शाहजहाँपुर।

शोध सारांश

आज का युग तकनीकी युग है एक समाज के सामाजिक, आर्थिक विकास के लिए मोबाइल सेवाओं को विश्वभर में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जा रहा है। जब भारत में मोबाइल नया–नया आया था तब हर मोबाइल रखने वाला इंसान किसी महामानव से कम नही समझा जाता था। 28 साल पहले हमारे देश में पहली मोबाइल काल हुई थी, 31 जुलाई 1995 को बंगाल में उस समय के मुख्यमंत्री ज्योति वसु ने पहली मोबाइल कॉल की थी उन्होने भारतीय संचार इतिहास की पहली काल कोलकत्ता की राइटर्स बिल्डिंग से नयी दिल्ली में केन्द्रीय दूर संचार मंत्री सुख राम को किया गया था। भारत में 2006 तक स्मार्टफोन के 7.5 अरब उपयोगकर्ता होंगे। डेलॉयट की जारी रिपोर्ट के अनुसार ग्रामीण इलाकों में इंटरनेट सुविधा से लैस मोबाइल फोन की बिक्री में वृद्धि हुई है। आज भारत में 116.1 करोड़ से ज्यादा उपभोक्ता हैं। भारत में पहले 2ळ इंटरनेट आया इसके बाद 3ळ, 4ळ, स्मार्टफोन और अब 5ळ नेटवर्क का उपयोग अपने मोबाइल पर कर रहे है। भारत में स्मार्टफोन की माँग सालाना आधार पर 6प्रतिशत से बढ़कर 2026 में 40 करोड़ हो जाएगी। आज भारत में हर चौथे आदमी के पास मोबाइल है। एक आंकलन के अनुसार भारत में हर घंटे 10 हजार मोबाइल बिक रहे है। आज 86प्रतिशत से अधिक आबादी के पास स्मार्टफोन है। 2024 तक स्मार्टफोन उपयोग कर्ता की संख्या 7.1 विलियन तक पहुंचने का अनुमान है। आज लगभग 91प्रतिशत कालेज, स्नातकों के पास स्मार्टफोन है।

चीन सबसे अधिक 974.69 विलियन स्मार्ट फोन उपयोगकर्ता के साथ अग्रणी देश है। इसके बाद भारत 6.59 विलियन के साथ दूसरे स्थान पर है। आज भारत में एक परिवार में एक से ज्यादा मोबाइल फोन है। एक जमाना था कि मोबाइल फोन किया और बात को सुना लेकिन आज इसका उपयोग बदल गया है बल्कि एक साथ कई काम कर रहा है। हम मोबाइल का उपयोग कम करे या ज्यादा यह हमारे सामाजिक जीवन प्रभावित करता है। मनोवैज्ञानिक प्रभाव को माने तो समाज का हर वर्ग मोबाइल फोन से तनाव महसूस करता है।

मुख्य शब्द– *मोबाइल, सामाजिक सम्बन्धों, तकनीकि तत्व, मनोवैज्ञानिक प्रभाव*

प्रस्तावना

समाज प्रारम्भ से ही सूचना प्राप्ति एवं उसके प्रेषण के लिए कई प्रकार से क्रियाशील रहा है क्योंकि हर व्यक्ति के लिए सूचना महत्वपूर्ण है। संचार वैयक्तिक या समूह के साथ स्थापित होता है। जनसंचार के माध्यमों में मोबाइल महत्वपूर्ण माना जा रहा है इसके द्वारा हम समूह तक शिक्षा,

मनोरंजन एवं सूचना प्रेषित करते है। आधुनिक समाज के लिए उपयोगी है। कृषि प्रधान देश होने के कारण आज गांव से शहरों को सीधा सम्पर्क न होना विकास में बाधक हो रहा है किन्तु मोबाइल क्रान्ति ने सारे विश्व को एक साथ ला खड़ा कर दिया है। आज प्रत्येक योजना, जानकारी, घटना शासकीय नीतियाँ, सूचना मनोरंजन प्रत्येक व्यक्ति के पास आसानी से मिल रही है। आज मोबाइल के माध्यम से इन्टरनेट बैंक की कार्य प्रणाली, किसानों से जुड़ी योजना मेल, एस.एम.एस. आदि प्रत्येक कार्य आसानी से किये जा रहे है। प्रारम्भ में दूरसंचार सेवाओं का उपयोग सरकारी एवं उद्योग क्षेत्र में किया जाता था। किन्तु आज हर घर में मोबाइल होने से जारी सूचना आसानी से मिल रही है। प्रधान मंत्री का स्वप्न भारत के प्रत्येक नागरिक को इंटरनेट की विशाल दुनिया के साथ जोड़कर ग्लोबल बनाने का है। आज मोबाइल के माध्यम से शिक्षक ऑनलाइन अपने विचारों और संसाधनों को साझा कर रहे है जो बहुत ही उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

वर्तमान में मोबाइल फोन मानव को चाँद तक पहुँचा दिया है। सर्वप्रथम ग्राहमवेल ने 1876 में टेलीफोन का अविष्कार किया तो वह वायरलेस था और वह भी हर व्यक्ति के पहुँच से बाहर था। किन्तु मर्टिन कूपर ने सन् 1973 में पहला मोबाइल फोन बनाकर क्रान्ति ला दी उस समय हमें विल्कुल अंदाजा नहीं था कि आने वाले कुछ सालों में विश्व की आधी आबादी के पास मोबाइल होगा और ना के बराबर कीमत में लोग मोबाइल खरीद सकेंगे।

मोबाइल फोन का सकारात्मक प्रभाव

1. **डिजिटल इंण्डियाः—** डिजिटल इंण्डिया एक ऐसी क्रान्ति है जो बिना किसी सीमा को जान—पहचाने लोगों को सूचना का अधिकार देती है डिजिटल इण्डिया की सिटिजन जर्नेलिज्म (लोक—पत्रकारिता) के लिए जाना जाता है।
2. **शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोगः—** शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक आनलाइन नोट्स, परिचर्चा, ब्लाक, ई—बुक, वीडियो के माध्यम से शिक्षा बच्चों की समझ और याददाश्त में वृद्धि पायी गयी डिजिटल इण्डिया के माध्यम से स्कूलों में वाई—फाई से जोड़ कर ज्ञान तंत्र खड़ा कर दिया। 2011 की जनगणना में यह बात सामने आई कि 6 से 8 वर्ष की उम्र के 20 प्रतिशत बच्चों को शब्द और संख्याओं का ज्ञान नही था। गल्ली—गल्ली, सिम—सिम नामक एक अनूठी पहल के अन्तर्गत बिहार और दिल्ली के कुछ स्कूलों में बच्चों को फन एंड लर्न एप्लीकेशन के उपयोग से उत्साह वर्धक ज्ञान प्राप्त हुआ।
3. **स्वास्थ्य पर प्रभावः—** ग्रामीण महिलाओं का गिरता स्वास्थ्य, कुपोषण और सर्वाधिक मातृत्व मृत्युदर वर्तमान परिदृश्य में अनेक चुनौतियों में से एक है। सरकार ने आरोग्य सखी नाम एक मोबाइल एप्लीकेशन लांच किया है जिसका इस्तेमाल महिला कर सके ताकि विभाग तक पहुँचे और डॉक्टर आसानी से इलाज कर पाये।
4. **लोगों की समस्याओं का समाधानः—** जीवन शैली के सभी क्षेत्रों में, विशेषकर सामाजिक रहन—सहन, स्थानीय व्यापार, स्वास्थ्य, बैंकिग, ई—गर्वनेंस, जमीनों के नक्शे, टैक्स संबंधी सूचना, रेलवे टिकट, अस्पतालों की ओ.पी.डी, मनोरंजन,रोजमर्रा की जरूरतों आदि जैसे— सुविधाओं का प्रभाव देखने को मिल रहा है।
5. **महिला सशक्तीकरणः—** शहर और गांवों में मोबाइल ने एक तरफ कनेक्टिविटी बढाई है तो दूसरी तरफ आत्म विश्वास भी पैदा किया है। वहीं मोबाइल घरेलू हिंसा से

लड़ने में भी मददगार हुए हैं। महिलाओं की पहुँच में मोबाइल आने से सशक्तिकरण को नयी दिशा मिली है।

6. **रोजगार के बढ़ते अवसरः–** आज मोबाइल के विभिन्न ऐप्स जैसे– youtube, watch video app, Cash play watch, Rojgar Sangi mobile app, Naurkari.com, Blogger.com, Affiliate Marketing, Content Writing, Mobile Game, Online surveys, Refer & Earn App, facebook, Instagram, Telegram, Photosell, Reselling, Quora, Audiobook, URL, Shortener,आदि ऐप्स के माध्यम से रोजगार प्राप्त हो रहा है।

मोबाइल फोन के नकारात्मक प्रभाव

यह सामाजिक संबंधो में दूरिया बढ़ाने, दुख हो या सुख व्यक्ति दो मिनट बातकर के अपनी जिम्मेदारी कम कर लेता है। माता–पिता एवं बच्चों से मोबाइल फोन का स्थान सुविधा के कारण उच्च हो गया है। जो परिवार की दूरिया बढ़ाने में कार्य करता है। मोबाइल पर बात करते हुए कार–मोटर चलाने से दुर्घटना बढ़ी है। मोबाइल पति–पत्नी के बीच किसी तीसरे का आभास दिलाता है। नयी पीढ़ी में संचार के साधन अनेक बुराइयों को जन्म दे रहा है। झूठ, चोरी, ब्लैकमेलिंग, अश्लीलता, एम.एम.एस. अपहरण एवं अनैतिक आचरण सोचना व करना व्यक्ति के लिए आसान हो गया है। मोबाइल फोन से अधिक खर्च भी बढ़ा है। बच्चों का जेब खर्च केवल मोबाइल फोन पर होने लगा है। मोबाइल फोन के अधिक इस्तेमाल से मानसिक रोगी, कैंसर, ह्दय रोग आदि कई बड़ी बीमारियाँ भी हो रही है। इसके आलावा मोबाइल फोन के अपनी गोपनीय जानकारी सेव करते है। हैकर्स उसका गलत उपयोग करते है।

शोध साहित्य का पुनरावलोकन

साहित्य की समीक्षा का अर्थ उन सभी प्रकार की पूर्व अनुसंधानों, पुस्तकों एवं अभिलेखों आदि से है। जिसमें की शोधकर्ता को अपनी समस्या के परिकल्पनाओं का निर्माण करने एवं ऊर्जा को नया दिशा निर्देश कर आगे बढ़ाना है। शोधकर्ता द्वारा किये गये पूर्व अध्ययन साहित्य का विवरण निम्नलिखित है–

1. **जोएल विलियक्स (2012)** मोबाइल फोन का अधिक अव्यवस्थित उपयोग साइबर व्यसनों के एक वर्णक्रा का हिसा है जो विभिन्न प्रकार के अव्यवस्थित व्यवहारों को शामिल करता है और विशिष्ट आनलाइन गतिविधियों जैसे– विडियो गेम, जुआ, सोशल नेटवर्क, सेक्स सम्बन्धी वेवसाइटों में भागीदारी लाता है।
2. **चेन एट अल (2022)** मोबाइल फोन उपयोग कर रहे कालेज छात्रों की सामाजिक अनुकूलनशीलता पर बुरा प्रभाव पड़ा है।
3. **मित्तल और कुमार (2000)** ने मोबाइल फोन का कृषि पर प्रभाव शोधकार्य करने के उपरान्त उन्होने यह मोबाइल फोन कृषि सेवा के रूप में किसानों में जागरूकता लाती है। मोबाइल फोन के उपयोग से उनके क्रय–बिक्रय का मूल्य पता चल जाता है। जो उनके लिए लाभप्रद होता है।
4. **सैडी (2002)** ने मोबाइल फोन का सामाजिक एवं व्यक्ति जीवन पर प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि मोबाइल फोन का उपयोग व्यक्ति के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन पर अधिक प्रभाव डालता है। मोबाइल फोन सामाजिक सम्बन्ध को अधिक मजबूत बनाने और संबंधों में नजदीकियाँ लाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

किसी भी कार्य करने के पीछे कोई ना कोई उद्देश्य होता है। शोध कार्य पूर्ण करने के लिए उद्देश्य को जानना आवश्यक होता है। प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्नलिखित उद्देश्य का निर्धारण किया गया है।

1. समाज पर मोबाइल फोन का सामाजिक आर्थिक स्थिति को ज्ञात करना।
2. समाज पर मोबाइल फोन का दैनिक जीवन में उपयोग।
3. समाज पर मोबाइल फोन के सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन करना।
4. समाज पर मोबाइल फोन के मनोवैज्ञानिक प्रभाव का अध्ययन करना।
5. समाज पर मोबाइल फोन का स्वास्थ्य पर प्रभाव।

परिकल्पना

अनुसंधान में समस्या के चुनाव के बाद शोधकर्ता समस्या से सम्बद्ध सामान्यज्ञान के आधार पर कार्य कारण सम्बन्धो का पूर्वानुमान लगाता है। यह पूर्वानुमान ही प्राकल्पना कहलाती है। प्राकल्पना को स्पष्ट करते हुए जी लुण्डवर्ग ने लिखा है कि प्रकल्पना एक काल्पनिक सामान्यीकरण है, जिसकी प्रमाणिता की जाँच करना अभी शेष है। प्रारम्भिक स्तर पर प्राकल्पना, प्रतिम, अनुमान, काल्पनिक विचार या सहज ज्ञान हो सकता है जो कि क्रिया या अनुसंधान का आधार बन सकता है।

यद्यपि वर्णनात्मक शोध में उपकल्पना का निर्माण आवश्यक नही है तथापि अध्ययन को सुचारू रूप से पूर्ण करने के लिए कुछ उपकल्पनायों का निर्माण किया गया है जो निम्न है।

1. मोबाइल फोन सामाजिक तथा पारिवारिक सम्बन्धों में काफी उपयोगी तथा महत्वपूर्ण माना जाने लगा है।
2. मोबाइल फोन समाज के सभी वर्गों में दैनिक उपयोग के लिए दिन पर दिन बढ़ता चला जा रहा है।
3. मोबाइल फोन कालेज छात्रों एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए उपयोगी साबित हो रहा है।
4. मोबाइल फोन से शारिरिक तथा मानसिक प्रभाव पड़ रहा है।

अध्ययन क्षेत्र

सामाजिक शोध हेतु उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जनपद के दो गांवों क्रमशः गुगांरी एवं कोटवा का चयन किया गाया है। गुगांरी गाँव प्रयागराज जनपद के मुख्यालय से लगभग 22 कि.मी. दक्षिण दिशा में करछना तहसील में अवस्थित है। 2011 की जनगणना के अनुसार इस गाँव की कुल जनसंख्या 9671 है। कोटवा गाँव प्रयागराज जनपद से 24 कि.मी. दूर पूर्व दिशा में फुलपुर तहसील में अवस्थित है। 2011की जनगणना के अनुसार उस गाँव की जनसंख्या 9100 है।

अध्ययन विधि एवं प्रविधि

सामाजिक शोध वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित है। जो दो प्रविधियों के द्वारा सम्पन्न किये जाते है जनगणना विधि निदर्शन विधि। प्रस्तावित अध्ययन निदर्शन विधि के साथ किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक तथ्यों पर आधारित है।

अध्ययन हेतु प्रयागराज जनपद के दो गाँव गुगांरी व कोटावा के 50 परिवारों के उत्तरदाताओं का चयन किया गया, जिसमें 18प्रतिशत लोग सरकारी नौकरी, 42 प्रतिशत

अध्ययन, 10 प्रतिशत कृषि, 20 प्रतिशत मजदूरी, 10 प्रतिशत अन्य कार्यों में लगे हुए हैं।

चयनित उत्तर दाता के परिवार की प्रकृति

50 परिवारों के उत्तरदाता का चयन किया गया जिसमें 30ः लोग संयुक्त परिवार में एवं 70ः प्रतिशत लोग एकाकी परिवार में रह रहे है।

चयनित उत्तरदाताओं का व्यवसाय

बैंकिग के क्षेत्र में मोबाइल का प्रभाव सर्वाधिक 40 प्रतिशत पड़ा है। मोबाइल के प्रभाव के कारण जहां लेन–देन सिधे हाथों द्वारा होकर पासबुक में बनाया जाता था। शेष राशी हाथों से लिखी जाती थी। आज कम्प्यूटर गणना मशीन द्वारा लेन–देन होता है। मोबाइल फोन के कारण ग्रामीण व्यवस्था में कार्य करने के तरीकों में परिवर्तन आया है।

उत्तरदाता मोबाइल का प्रयोग

उत्तरदाता 34 प्रतिशत परिवार में 3–5 लोग जो मोबाइल का प्रयोग करते है 42 प्रतिशत परिवार में 5–7 लोग एवं 24 प्रतिशत परिवार जिनमें 1–7 लोग मोबाइल का प्रयोग करते है।

अध्ययन की समस्या एवं निदान

अध्ययन में उत्तरदाता किसी भी बात को लेकर बड़ा ही असहज महसूस कर रहे थे क्योंकि आज मोबाइल मानव का अभिन्न अंग हो गया है। फिर भी बात गोपनीय रखा जाएगा तो उत्तर देने को तैयार हुए ।

मोबाइल फोन से सम्बन्धित, आर्थिक, सामाजिक, मानसिक बात बताने में उत्तरदाता को विश्वास में लेकर शोध कार्य किया गया।

निष्कर्ष

आज मोबाइल फोन अपने त्वरित संचार ऑनलाइन सेवाओं, उत्पादकता मंनोरंजन, मार्गदर्शन और बहुत कुछ के साथ दुनिया को करीब ला दिया है। आज मोबाइल फोन समाज के उच्च वर्ग से प्रारम्भ होकर निम्नतम तबकों तक, सरकारी– गैर सरकारी संस्थानों में, बूढ़ों तथा बच्चों सभी में समान रूप से प्रचलन में है। मोबाइल फोन जहाँ एक ओर समाज को जोड़ने का काम कर रही है तो दूसरी तरफ समाज के लिए चिता का विषय बन गया है। मोबाइल फोन पारिवारिक तथा सामाजिक संबंधों में दूरिया पैदा करने के साथ तोड़ने का भी काम कर रही है। बच्चो में मनोरंजन के स्वास्थ्य साधनों के प्रयोग को कम कर रहा है। मोबाइल फोन भारत की विभिन्न संस्कृतियों, धर्म, प्रथा, परम्परा, रिति रिवाज आदि का आसानी से अनुकरण करने का मार्ग दिखा रही है। वही दूसरी तरफ मोबाइल फोन हमारी संस्कृति को पश्चिमी सभ्यता की ओर ले जा रही है। फोन हमारे दैनिक जीवन में इतना आगे बढ़ गया है। कि समाज का कोई भी काम इसके बिना अधूरा सा लगने लगा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सर विलियम, स्तुवर्ट (2008) मोबाइल फोन का स्वास्थ पर प्रभाव , संचार तकनीकी आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, पृ. 32–92
2. कम्प्यूटर संचार सूचना, इण्डिया पब्लिकेशन, नयी दिल्ली अगस्त 2008 पृ. –3,1
3. गोयल हेमन्त कुमार, कम्प्यूटर शिक्षा, आर लाल, बुक डिपो मेरठ, पृ. 25।
4. मिलन और कुमार (2000) मोबाइल फोन का कृषि पर प्रभाव आर्थिक विश्लेषण

साप्ताहिक शोध पत्र, कृषि आर्थिक रिसर्च , चण्डीगढ़, पृ.88

5. जेफरी राबिन (2013). द गेट इंडियन फोन बुक. सी हर्स्ट एड कपनी पब्लिशर्स लिमिटेड, यूके संस्करण (15 जून 2013)

6. कीथ (2009) आधुनिक समाज में मोबाइल का महत्व

7. बेलच जी. बेल्स (2004). विज्ञापन और प्रचार : एक एकीकृत विपणन संचार परिप्रेक्ष्य. न्यूयार्क : मैकग्रा हिल।

8. नव भारत टाइम (2022), नयी दिल्ली , 22 फरवरी।

9. के रविन्द्रन(2018), कोयण्ट्र क्षेत्र के चयनित ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में मोबाइल ऐप के प्रभाव पर एक तुलनात्मक अध्ययन (पी. एच. डी. उपधि हेतु प्रस्तुत) पेरियार विश्वविद्यालय।

10- मोबाइल के फायदे और नुकसान https//techrogic-com/mobiles&advantage&and&disadvantage&in hindi/

11. कुरुक्षेत्र (2016) मोबाइल क्राति ने दी ग्रामीण विकास को नई दिशा। फरवरी पृ. 14, 15,17

12. अमर उजाला (2024) 23 मार्च, पृ.2